AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

मगही लोकगीतों में कर्म चेतना और प्रकृति

- रामनिवास शर्मा
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

DECLARATION: I ASAN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

भाषा और संस्कृति एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं जैसे पत्ते और वृक्ष। भाषा संस्कृति का ही एक अंग है। संस्कृति को फलने फूलने में भाषा का योगदान अप्रतिम है। मूल रूप से भाषा और बोली में कोई तात्विक अंतर नहीं है। दोनों ही संप्रेषण के साधन है। अंतर केवल व्यापक रूप से स्वीकृति का है, प्रयोग क्षेत्र का है। जब हम अपने जड़ों की तरफ देखते हैं तो परंपरा और संस्कार नजर आता है। इस परंपरा और संस्कार की अभिव्यक्ति हमें लोक साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। कहते हैं कि मिलावटी चीजें अच्छी नहीं होती लेकिन लोकगीत की खूबसूरती उसके मिलावटपन में ही है। यही इसे सर्वग्राही बनाता है। यह मिलावट शुद्धता में अशुद्धता के समिश्रण से नहीं हुआ है बल्कि शुद्धता में शुद्धता के समिश्रण से हुआ है।

ग्राम का लोक मानस सरल एवं सहज मनोजगत से निर्मित होता है, जिसमें उनका रीतिरिवाज, परिवार समाज एवं संबंधों की एक दुनिया समाहित होती है, प्रकृति, परिवेश एवं कार्य-व्यापार समाहित होते हैं। लोक मानस के पटल पर इसी तरह की ताजगी और बानगी की झलक मगधी साहित्य के लोकगीतों में मिलती है। मगही साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जो पालि मागधी भाषा में प्राकृत मागधी, अपभ्रंश अथवा आधुनिक मगही भाषा में लिखी गयी है। जन सामान्य अपने दैनदिन में किस प्रकार अपने लोक भाषा के माध्यम से गीतों की रचना करते हुए एक दूसरे से परस्पर जुड़े रहते हैं। चाहे सामाजिक जमावड़ा हो या सांस्कृतिक परिवेश, प्राकृतिक संपदा हो या पारिवारिक कर्मकांड, हर परिस्थिति में एक दूसरे का महत्व बखूबी जानते हैं ।

एक ओर जहां शास्त्रीय संगीतों में लय, तुक, वादन यंत्रों की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती है वही लोकगीतों में कुछ एक वाद्य यंत्रों के साथ एक दूसरे के साथ गाया करते हैं। लोकगीत विशेष रूप से क्षेत्र, समाज, गाँव और व्यक्ति विशेष के गीत हैं। सभी भाषाओं के लोकगीतों की भांति मगही लोकगीतों में भी शास्त्रीय संगीतों की भांति नित दिन प्रयासरत या निरंतर अभ्यासरत रहने की आवश्यकता नहीं होती। अन्य भाषाओं के लोकगीतों के भांति मगही लोकगीत भी पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरागत रूप में बढ़ती है। मगही लोकगीतों में मुंडन गीत, सोहर गीत, जनेऊ गीत, विवाह गीत, उत्सव गीत, पूर्व गीत , लोकगाथा गीत आदि आते हैं।

मगही लोकगीतों को क्षेत्र, ग्राम्य समाज विशेष के लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर गाया करते हैं। इन सभाओं में गीतों में लय और आनंदायक रूप प्रदान करने के लिए आहो रामा, हाँ, हो, आदि शब्दों के साथ दो या तीन वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है, जिसमें मूलतः झाल, करतल और ढोलक होते हैं ।

लोकगीतों के लिए ज्यादातर पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि है। कहरवा, बिरहा, घोबिया आदि ग्रामीण भागों में बहुत पाए जाते है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

लोकगीत अधिकतर देहातों में पाए जाते है। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं। लोकगीतों के विषय अपनी रोजमर्रा की जिंदगी से ही अधिक लिये जाते है। ऋतुओं के गीतों में फाग और पावस गीत अधिक पसंद किये जाते हैं। फाग गीत अधिक तर पुरुषों द्वारा गाये जाते है।

यह गीत बसंत पंचमी से लेकर होली के सबेरे तक यह गीत गाये जाते हैं| अवधी, ब्रज, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढी, बघेली, भोजपुरी आदि अनेक बोलियों में फाग संबंधी गीत पाए जाते हैं। पावस गीत अवधी और भोजपुरी में अधिक प्रचलित होने के बावजूद भी उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में न्यूनाधिक मात्रा में पाए जाते है।

संस्कार गीतों में जन्मगीत, मुंडन, जनेउ, विवाह के गीत तो प्रायः सभी क्षेत्रों में पाये जाते है। मृत्यू समय के गीत भी महिलाओं द्वारा गाये जाते हैं। जातीय गीतों में भी पृथकता पायी जाती है। माँ के द्वारा गाये जानेवाली लोरी सभी जगहों पर हम देख सकते है। खेलों के समय में भी लोकगीत गाये जाते है।

तीसरी शताब्दी से ही प्राकृत भाषा में भी लोकगीत थे, इसका संकेत गाथासप्तशती में से प्राप्त होता है। अप्रभ्रंश काल में भी लोकगीत थे। लोकगीत अधिकतर अपेक्षित लोगों अधिक प्रचलित थे यानी बडे पैमाने पर शिक्षा का प्रचार प्रसार नहीं है, उन भागों में लोकगीतों का अधिक प्रचलन पाया जाता है। यथा-

पटना सहरिया दुपट्टी बजरिया से लगे लगल हो राम दोहरे बजरिया।

एक और बिकले अंगूठी मुनरिका से दोसर ओर हे राम बीके चुनरिया।

अपनी महलिया से निकले सँवरिया से करे लगल हे राम अंगूठी के मोलवा।

तोहरो से साँवरो हे मोल नहीं होतवऽ से भेज देहू हे राम अपनी बलमुआँ।

नाट्यगीत प्रश्नोत्तर के रूप में होते हैं। इसे अभिनयात्मक ढंग से गाया जाता है। अभिनय एवं प्रश्नोत्तर के रूप में रहने के कारण इन्हें लोकनाट्य गीत भी कहते हैं। यथा -

एक पात्र, रोहू अंगूठा से बिख चढ़ गेलो दाई कोई नहीं बिखिया उतारे दाई।

दूसरा पात्र चान तोरा भाई सूरज बहनोई, ओही तोरा बिखिया उतारे दाई।

जाट-जटिन, बगुला-बगुली, जीराबुन, गेढुरी आदि मगध के प्रसिद्ध लोकनाट्य गीत हैं। नृत्यगीत में पात्र नाँचता और गाता है। ऐसे गीतों में कोई निश्चित गीत नहीं आते। किसी भी गीत को नृत्य के ताल के साथ बैठाकर गा लिया जाता है। लोक मंडली गीतों को नृत्य के साथ आवद्धकर गाती बजाती है। इनमें पारिवारिक सम्बंधों और मुख्यतः श्रृंगार का चित्रण होता है।

गवना कराय पिया देहरी बइठवलऽ,

अपने चलले परदेस गोरिया, रस चुवेला भँवरवा अन्हार गोरिया । आदि

पर्यावरण और प्रकृति के संदर्भ में लोकगीत की बात करें तो प्रकृतिपरक लोकगीतों में शुद्ध गीत, नाट्यगीत एवं नृत्य गीत आते हैं। शुद्ध गीत स्वाभाविक रूप से सुर और ताल-लयबद्ध होकर लोक कंठ से फूटते रहते हैं। ऐसे गीतों के साथ नाँचने-गाने या वाद्ययंत्रों की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे लोकगीतों की सर्वाधिक संख्या रहती है।

मनुष्य अपने आदिम अवस्था से ही समूह में रहकर खेती-बाड़ी करता आया है। यह एक सामूहिक व्यापार है जो एक परिवार या सगे-संबंधी मिलजुलकर करते हैं। अन्न का उत्पादन जल पर निर्भर रहता है, जल बादल

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

पर और बादल मौसम पर। एक तरह से यह पूरा कार्य-व्यापार प्रकृति के सानिध्य में रहकर जीने का उपक्रम है। इसी मनोदशा में जो बोल फूटे होंगे वे धीरे-धीरे लोक-गीत के रूप में प्रचलित हो गए होंगे। लोक गीत का विषयवस्तु जीवन और जगत के सभी सहज कार्य-व्यापार, रीति रिवाजों से है। कर्म की चेतना और सहज प्राकृतिक बोध एक दूसरे से अनुस्यूत हो जाते हैं।

बेर ही बेर तोरा बरजूँ छयलवा से उखिया के खेत जनी जोतिहँऽ हो राम

पेन्हिये- ओढ़िये रामा भेली तइअरिया से चलिये भेली कोलसरिया हो राम।

जबही पहुँचली रामा ऊख कोलसरिया से देवरा-पापी फेंक मारे अंगेरिया हो राम । जाँघ तोरा थाकऊ जवानी घुन लागऊ अरे तोरे अछते देवरा पापी मारे हो राम ।

इन पंक्तियों में पत्नी पति से कहती है कि हे मेरे छैला, ईख की खेती मत करो पर तुम तो माने नहीं। मैं पहन-ओढ़कर तैयार हुई और कोलसार गई। जब ईख पेरने के समय कोलसार पहुँची तो पापी देवर ने अंगेरी फेंककर मारने लगा। वह पति को गाली देती कहती है कि तुम्हारी जाँघ थक जाय और जवानी में घुन लग जाय, तुम्हारे रहते पापी देवर ने ईख फेंककर मारा है। पारिवारिक नोंक-झोंक के इस चित्रण में जो चीज समानांतर रूप से गतिशील है जो खेत और ईख के कार्य व्यापार से जुड़ा है।

आरंभिक भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित था। एक लोकगीत की बानगी देखें जहां नदी या तालाब किनारे धोबी पाट पर वस्त्र धोते यह गीता गाता है। इसमें उसकी दीनता, पारिवारिक विक्षोभ एवं हीन भावना के साथ स्वच्छ वस्त्र प्रक्षालन के प्रति आस्था का भाव व्यक्त हुआ है-

छियो राम छियो, छियो राम छियो, छियो

राम नीमिया के पेड़वा बड़ा नीक लागे

जब नीम कौड़िया गोहुँमा के रोटिया बड़ी नीक लागे

जब घीव दे चुपड़ी होय । हो मालिक, धीव दे चुपड़ी होय-

छियो राम छियो, छियो राम छियो ।

अच्छा धोबिया बड़ नीक लागे, जब धोवे बगुलवा के पाँख, हो मालिक, धोवे.... । लेके रोटिया चली धोबिनियाँ पहुँची गंगाघाट, हो मालिक,

पहुँची गंगा घाट वजरा के रोटिया,

सरसो के सगिया, धोबिया मगन मन खाय, हो मालिक,

धोबिया मगन मन खाय।

छियो राम छियो, छियो राम छियो।

पाछे सकारे आयो धोबिनियाँ, रोटिया लियो चोराय, हो मालिक

रोटिया लियो चोराय।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

छियो राम छियो, छियो राम छियो ।

अच्छा धोबिया बड़ नीक लागे, जब धोबे बगुलवा के पाँख।

छियो राम छियो.....

छियो राम छियो' लोकगीत की ताल ध्वनि है जो वस्त्र के पिटने के साथ निकलती है।

कुछ ऐसे लोकगीत हैं जो मौसम विशेष में ही गाए जाते हैं। लेकिन देवी-देवता से सम्बंधित गीत किसी भी मौसम में गाए जाने पर वे मौसमी गीत नहीं हो सकते। अतः मौसमी गीतों की अपनी विशेषताएँ होती है। जैसे फागु या चैता को फागुन या चैत्र महीने के बाद गाया नहीं जा सकता है। पूर्वी, कजरी या चौहट भी वर्षा के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में नहीं गाए जा सकते हैं। यह ठीक है कि विभिन्न ऋतुओं में गाए जानेवाले गीतों के कार्य विषय अलग-अलग होते हैं । परंतु उनमें सम्बंधित ऋतुओं का प्रभाव अवश्य रहता है।

यथा-

पूरब भर उगले सूरजमल हे न, दइया पछिम रे

भरउ पछिम भर जयेबई जउहट खेले हे नऽ ।

तुहूँ का जयबऽ धानी चउहट खेले हे न, दइया हमरो,

हमरो के जलवा लगा के जइहँ नऽ ।

जलवा लगवते बड़ी देर होतई न, दइया दुअरे,

दुअरे सहेली सब खाड़ हथी हे नऽ ।

जाहूँ सलेहर सब घर अप्पन हे न, दइया

घर ही घर ही में पिया बेइमनवाँ हे नऽ ।

इन पंक्तियों में चौहट खेलने वाली सखियों को घर से एक बधू कहती है कि पूर्व दिशा में सूर्य उगते हैं और मैं पछिम की गली में चौहट खेलने जाऊँगी। घर में बैठा पति कहता है कि हे धनी, जब तू चौहट खेलने जाओगी तो मेरे लिए जल रखकर ज़ाना। पत्नी कहती है कि पानी लाने में देरी होगी, दरवाजे पर सभी सखियाँ खड़ी है। अंत में खीझकर वह कहती है कि हे सखि, तुम सब घर चली जा, मेरे घर पर मन का पति रहता है। इन लोकगीतों में दांपत्य का जो सहज जीवन अपनी सादगी के साथ उभरकर आया है जो देखते ही बनता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

उमाशंकर भट्टाचार्य की कहावत (१९१९)

जय नाथ पति और महावीर सिंह कृत: मगही मुहावरा बुझौवल (१९२८)

डॉ विश्वनाथ प्रसाद कृत : मगही संस्कार गीत (१९६५)

डॉक्टर राम प्रसाद कृत : मगध की लोक कथाएं: अनुशीलन (१९९६)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

संपत्ति आर्यन कृत : मगही लोक साहित्य (१९६५)

डॉक्टर राम प्रसाद सिंह कृत: मगही लोकगीत के संग्रह (१९९८) इनामुल हक कृत: मगही लोक गाथाओं का साहित्यिक अनुशीलन

(२००६)

डॉ श्रीकांत शास्त्री एवं डॉ रामानंद कृत : मगही लोकगीत एवं सेंशन

मथुरा प्रसाद सिंह एवं रामेश्वर महतो कृति: मगही बाल गीत

विश्वनाथ प्रसाद कृत: मगही संस्कार गीत

संत राम नगीना सिंह कृत: मगहिया गीत

श्री नंदन शास्त्री कृत: अप्पन गीत रामदास आर्य कृत : गीत आदमी के

आदि आदि ।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything other wise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technicalfault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed I website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

रामनिवास शर्मा